हज़रत पैग़म्बर (स०) का आचरण और ज्ञान

मौलाना सै0 नसीर इज्तेहादी पाकिस्तान

जब हम हज़रत पैग़म्बर (स०), हमारे प्राण उन पर न्योछावर हों, की व्यवहारिक जिन्दग़ी पर नज़र डालते हैं तो क़दम–क़दम पर हमें ऐसे आसार नज़र आते हैं कि हुज़ूर (स०) ने ज्ञान के प्रचार प्रसार में असाधारण सक्रियता दिखायी है। ऐसा राष्ट्र जो शास्त्रों की प्रारम्भिकी (उलूम की मबादीयात) लिखने पढ़ने से भी महरूम था उसके सामने ज्ञान विज्ञान के सागर बहा के रख दिये और उसका यह असर हुआ कि जाहिल और गंवार अरब ज्ञान से इतना मालामाल हुये कि 'ईरान और 'रोमा' की सभ्यताएं भी उनके सामने मांद पड़ गयीं और इस्लामी पाठशालायें और शिक्षण केन्द्र इतना प्रगति कर गये कि दुनिया भर के ज्ञान के प्यासे इन्हीं केन्द्रों के यश से अपनी प्यास बुझाने लगे। हुज़ूर (स०) ने अपनी पुनीत शिक्षाओं से मानवता को ज्ञानार्जन की राह पर लगा दिया और प्रत्येक मुसलमान के लिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया। चुनांचे हज़रत (स०) ने अपने बहुमूल्य कथन, प्रत्येक मुसलमान पर ज्ञानार्जन वाजिब है'' द्वारा इसकी अनिवार्यता पर मुहर लगा दी और सामान्य मानस में यह बात बिठा दी कि मानवता के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में ज्ञानार्जन का वही स्थान है जो मानव काया में आत्मा का है। किसी एक को भी इससे मुक्ति नहीं दी फिर मज़े की बात यह है कि उस के लिए, अवस्था, काल आदि का बन्धन भी तोड़ दिया। फर्माया कि ''बचपन से जीवन के अन्तिम क्षण तक ज्ञान प्राप्त करते रहो। ''नतीजा यह हाथ लगा कि झूले से ले के गोर किनारे तक एक क्षण भी तो ऐसा नहीं जिसमें इस कर्तव्य की अनिवार्यता न रहती हो। प्रत्येक क्षण एक दीनदार मुसलमान का कर्तव्य है कि वह अपनी शास्त्रीय योग्यता बढ़ाने में इतनी सक्रियता दिखाये जो कर्तव्य पालन से मेल खाती हो। क्या मुसलमान इधर ध्यान देंगे?

फिर भौगोलिक हदबन्दियों में भी विशालता पैदा कर दी कि जहां भी तुम्हें ज्ञान मिले चाहे वह संसार के दूर दराज़ भूखण्डों में क्यों न हो, हिम्मत के क़दमों में सुस्ती और भारी पन न आने पाये। ''इल्म हासिल करो चाहे तुम्हें चीन ही क्यों न जाना पड़े'' इस महत्वपूर्ण मानव कर्तव्य की महत्ता हुज़ूर (स०) ने कदम–कदम पर बतायी है। ज्ञान की लाभकारिता और विद्वानों के मान मर्यादा से आगाह किया है। चुनांचे एक जगह पर विद्वानों को पैग़म्बरों का वारिस ठहराया है। पैग़म्बरों का मिशन भी ज्ञान–विज्ञान का प्रसार था। उनका मन्तव्य भी मानव अज्ञान की अंधियारी के पर्दों को ज्ञान ज्योति से चाक करना था उलमा उनके ज्ञान और यथार्थ के अमानतदार होते हैं। यह इल्मी मीरास उनको पहुंचती है। बेशक यह मांगलिकता उनकी महिमा बढ़ाती है उनकी ज़िम्मेदारियों में भी बहुत बड़ी वृद्धि हो जाती है। तभी वह सच्चे अर्थों में कोषधारी और अमानतदार हो सकते हैं जब उत्तराधिकार के हक को ठीक–ठीक काम में लायें। मानव जाति में पैग़म्बरों से बढ़ के तो कोई और है नहीं और उलमा का वारिस होना बहुत बड़े सम्मान का प्रमाण है जो ज्ञान का ऋणी है। दूसरे शब्दों में यूं समझें कि वास्तव में यह ज्ञान और विज्ञान ही का मान–सम्मान है और उसी की महिमा। हुजूर (स०) के इस शुभकथन का अर्थ ही यह हुआ कि मानवता ज्ञान द्वारा ही अपनी पराकाष्ठा को

पहुंचती है और इसी के प्रकाशमय दीप से प्रत्येक अंधेरा स्थान प्रकाशित हो सकता है।

हुज़ूर (स०), मेरा प्राण उन पर न्योछावर, की एक हदीस में आया है कि आप ने यूँ दुआ की कि, खुदा वन्दा ! मेरे उत्तराधिकारियों पर दया कर'' पूछा गया, हुज़ूर (स०) आप के वह उत्तराधिकारी कौन हैं? इर्शाद फरमाया, मेरे खलीफा (पदाधिकारीगण,) जो मेरी शिक्षाओं, हदीसों, आचार–विचार का प्रसार करेंगे और मेरे विचार लोगों तक पहुचायेंगे। ''इन हदीसों में भी ज्ञानियों–विज्ञानियों के रूतबे की बलन्दी और महिमा की ओर सूक्ष्म संकेत हैं और इससे ज्ञान के मुल्य–मर्यादा का पता चलता है। मानवता के आखिरी पैग़म्बर के उत्तराधिकार और जानशीनी की ऊंचाइयों को ज़रा सामने रखिए। इसके प्रसंग में ज्ञान की जो महिमा समझ में आती है उसका भी अन्दाजा फ़रमाइये। जरा इन ''उत्तराधिकारियों'' से भी परिचित होते चलें कि यह कौन हैं? मशहूर हदीस ''मैं ज्ञान का नगर हूं और अली उसका दरवाजा'' उनसे परिचित कराने के लिए पर्याप्त है। और हज़रत अली (अ०) के इस कथन से कि ''हज़रत (स०) ने मुझको ज्ञान यूँ भराया जैसे चिड़िया बच्चे को दाना भराती है।'' पहचान लीजिए, यह अहल–ए–बैत का (अ०) ओहदा है जिनके ज्ञान के सोते पैग़म्बर (स०) के ज्ञान की सरिता से फूटते हैं। जिनकी नूरानी क़िन्दीलें पैग़म्बरी ज्ञान की मश्अल से प्रज्वलित हुयी हैं। पैग़म्बर (स०) के आचार–विचार के यह मुकम्मल नमूने थे। इन्हीं के दम क़दम से पैग़म्बर (स०) की हदीसों और शिक्षाओं का विस्तार हुआ और यही वह हक़ीकी उत्तराधिकारी (खुलफा) हैं।

हज़रत अबूज़र ग़फारी इस्लाम की एक नामवर हस्ती है। हज़रत पैग़म्बर (स०) के सहाबियों में उनकी एक विशेष महिमा है। उन महिमामयी सहाबियों में से हैं जिनके लिए जन्नत स्वंय उत्सुक है। उनके महिमामयी स्थान का अनुमान हज़रत पैग़म्बर (स०) की हदीसों से होता है। हुज़ूर (स०) ने आप को सम्बोधित करके फ़रमाया, ''हे अबूज़र ! एक घड़ी ऐसी गोष्ठी में बैठना जहां ज्ञान की बातें हो रही हों ज़ियादा अच्छा और अल्लाह को ज़ियादा प्रिय है हज़ार रातें जाग के उपासना करने से। और रातें भी ऐसी कि जिनमें हज़ार–हज़ार रक्अत नमाज़ अदा की गयी हो। और यह हज़ार बार खुदा की राह में जिहाद करने से भी बेहतर है और बारह हज़ार कुरआन के पाठ से भी ज्यादा अच्छी है। एक साल की ऐसी इबादतों से भी अच्छी है जिसके दिनों में आदमी रोज़ा रखे और रातों को जाग के इबादत करे । हे अबूज़र ! जो कोई अपने घर से कोई शास्त्रीय प्रश्न सीखने का इरादा करके निकलता है या ज्ञानार्जन के लिए प्रस्थान करता है उसे प्रत्येक पग पर जिसे वह उठाता है एक पैग़म्बर का सवाब मिलता है और बद्र के शहीदों के समतुल्य हज़ार शहीदों के बराबर बदला मिलता है। प्रत्येक अक्षर जो किसी आलिम से सुनता है, ग्रहण करता है और लिखता है उसके बदले में उसे स्वर्ग में एक नगर प्रदान किया जाता है। एक विद्यार्थी की इससे बढ़के क्या मांगलिकता होगी कि अल्लाह उसको दोस्त रखता है फरिश्ते और पैग़म्बर उस से प्रेम करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हर शुभ और मंगलमयी व्यक्ति उस से प्रेम और स्नेह का सम्बन्ध रखता है। विद्यार्थियों के सौभाग्य का क्या कहना! ज्ञानी के चेहरे पर नज़र करना हज़ारों गुलाम मुक्त करने से अच्छा है। ज्ञान प्रेमी के लिए बहिश्त (स्वर्ग) वाजिब हो जाती है। एक ज्ञान प्रेमी ऐसी दशा में सुब्ह शाम करता है कि खुदा की खुशी उस पर छायी हुई होती है। वह इहलोक नहीं त्यागता मगर यह कि उसे ''कौसर'' के पेय से तृप्त किया जाता है और उसे स्वर्ग के मीठे और पाक मेवे और फल खिलाये जाते हैं। मरने पर क़ब्र में उसे सांप बिच्छू नहीं खाते, उसका शव कीड़ों–मकोड़ों की खूराक नहीं बनता। जन्नत में वह हज़रत खिज़्र पैग़म्बर (अ०) का साथी और सहचर होगा।''

इस सर्व ग्राही हदीस पर विचार करें और कुरआने हकीम के शब्द ''खैर–ए–कसीर'' (नेकियों की बड़ी दौलत) को सामने रखिए, आप को मालूम होगा कि वाक़ई तमाम भलाईयां इसी से पैदा होती है और सब नेकियों की मुख्य जड़ यही ज्ञान है।

●●●